अेक नअी क्रान्ति

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३० जनवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सेवककी प्रार्थना

हे नम्रताके सम्राट्!
दीन भंगीकी हीन कुटियाके निवासी!
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्राके जलोंसे सिंचित
अिस सुन्दर देशमें तुझे सब जगह खोजनेमें हमें मदद दे।

हमें वरदान दे
कि सेवक और मित्रके नाते
जिस जनताकी हम सेवा करना चाहते हैं,
अुससे कभी अलग न पड़ जायं।

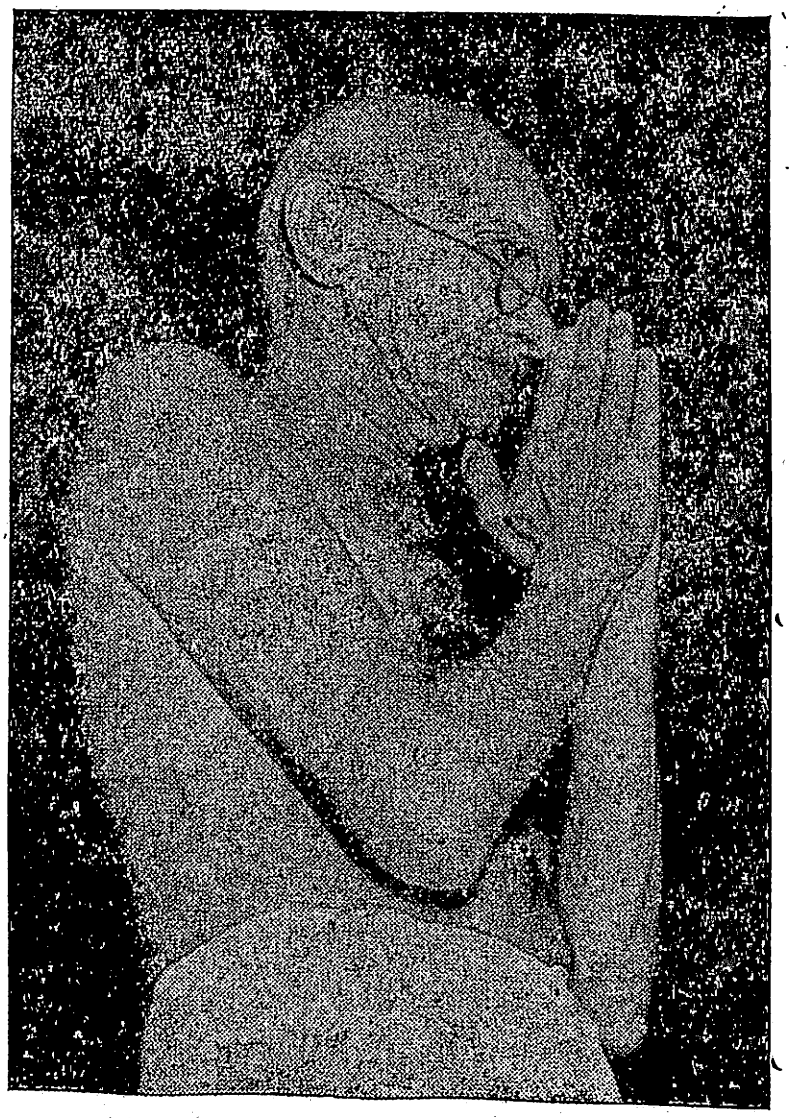

हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे;
तेरी अपनी नम्रता दे;
हिन्दुस्तानकी जनतासे अेकरूप होनेकी शक्ति और अुत्कंठा दे।
हे भगवन्! तूं तभी मददके लिअे आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।

हमें त्याग, भक्ति और नम्रताकी मूर्ति बना,
ताकि अिस देशको हम ज्यादा समझें,
और ज्यादा चाहें।

वर्धा, १२–९–'३४
(अंग्रेजीसे)

मो० क० गांधी

www.vinoba.in

गांधीजी जिसके प्रतीक थे*

१

आपने महात्मा गांधीसे सम्बन्ध रखनेवाली चर्चामें शामिल होनेके लिअे मुझे बुलाया और अुनके विषयमें, जिनके साथ कामसे भरे हुअे २८ बरससे भी ज्यादा अरसे तक घनिष्ठ सम्बन्धमें आनेका विरल सौभाग्य मुझे मिला, अपने अनुभवोंकी साक्षी पूरनेको मुझसे कहा, अिसके लिअे मैं आप सबका आभार मानता हूं। ज्यों ही मैं अिस लम्बे अरसेकी घटनाओंको याद करता हूं, मेरा हृदय भर आता है।

दुनियाकी आबादीके अेक-पांचवें भागकी जनसंख्यावाला राष्ट्र, जिसके पास संस्कृति और सभ्यताकी, विद्याओं और अुपयोगी कलाओंकी समृद्ध विरासत है और अत्यन्त प्राचीन कालमें प्राप्त हुअी आध्यात्मिक सिद्धिकी भव्य परम्परा है, साम्राज्यवादी शासकोंके गलेमें निर्जीव बोझकी तरह वैसे ही लटक रहा था, जिस तरह कि कहानीका प्रसिद्ध अेल्बेट्रॉस नामक पक्षी — जिसे प्राचीन नाविकने बिना कारण गोलीसे मार दिया था और जिसकी हत्याका पश्चात्ताप शाप बनकर अुसके पीछे लग गया था। जब तक अेल्बेट्रॉस जिन्दा नहीं हुआ, तब तक न तो शाप दूर हुआ और न अपराधीको पश्चात्तापकी आगसे छुटकारा मिला। कॉलरिजकी प्रसिद्ध कवितामें पश्चात्तापपूर्ण हृदयसे निकली हुअी सच्ची प्रार्थनाके प्रतापसे हत्यारे नाविककी अिस शाप और पश्चात्तापसे मुक्ति हुअी।

लेकिन भारतके मामलेमें यह चमत्कार कैसे हो? संस्थायें, व्यवस्थायें और प्रथायें निर्जीव कही जाती हैं — अुनमें व्यक्तिगत सम्बन्धकी कोअी गुंजाअिश नहीं होती और वे नैतिक या धार्मिक कानूनोंके अमलसे दूर होती हैं। और अेक अर्थमें यह सही भी है। लेकिन भारतके विषयमें यह चमत्कार हुआ और दुनियाने अुसे देखा। अेल्बेट्रॉस फिरसे जिन्दा हुआ, और अिस घटनासे सबसे ज्यादा खुशी अुस सत्ताको हुअी, जिसने अपने गलेमें अिस शापका फन्दा डाल लिया था और जो अिस फन्देको बहुमूल्य अुपहार मानकर अुससे चिपटी हुअी थी। जैसा कि हम सब जानते हैं, यह भारतमें अेक अैसे मनुष्यके आनेसे संभव हुआ, जो केवल अीश्वरके सत्यकी शोध करनेके लिअे ही जिया और अुस सत्यकी प्राप्तिके लिअे मनुष्य-जातिके बीच रहना ही जिसे सबसे अधिक प्रिय था। अुन महापुरुषने हमें यह दिखाया कि अुद्धार या मुक्तिका यह मार्ग राष्ट्रीय और आन्तरराष्ट्रीय समस्याओं पर, न केवल सदाचारी और धार्मिक मनुष्य पर बल्कि शिथिल भाषामें कहे जानेवाले 'अनैतिक समाज' पर भी कैसे लागू किया जा सकता है। अुनकी पद्धति विरोधी या अुसकी शक्तिका नाश करनेवाली नहीं बल्कि अुसे बदलने और अपना बना लेनेवाली थी; और अिस अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे अुनका साधन था दूसरेके लिअे कष्ट सहना, अहिंसा — जो अपने विधायक रूपमें प्रेमके नामसे पहचानी जाती है और जिसकी जड़ परब्रह्म अर्थात् सत्यके साथ हमारी अेकताके भानमें और अुसे प्राप्त करनेके जाग्रत प्रयत्नमें है। केवल वही महासत्य है, था और सदा कायम रहेगा — जो अीश्वर है और जो मानव सम्बन्धोंमें अपनेको प्रेमके रूपमें प्रकट करता है। हम अुसे किसी भी नामसे क्यों न पुकारें या हम अुसके अस्तित्वको स्वीकार करें या न करें, अिससे कोअी फर्क नहीं पड़ता। चूंकि वह कानून बनानेवाला और कानून दोनों है, अिसलिअे अुसके अस्तित्वसे अिनकार करना अुसके कानूनके अमल पर अुसी तरह कोअी असर नहीं करता, जिस तरह गुरुत्वाकर्षणके कानूनकी अुपेक्षा सेबको नीचे गिरनेसे रोक नहीं सकती।

* कुछ समय पहले नअी दिल्लीमें युनाअिटेड स्टेट्स अेज्युकेशनल फाअुण्डेशन नामक संस्थाके अमेरिकन विद्वानोंके समक्ष दिये गये भाषणसे।

सत्य और अहिंसाके मार्गके खिलाफ पशुबल या बदला लेनेका मार्ग है। टॉल्स्टॉयने अिस बातके वर्णनके लिअे अेक सुन्दर दृष्टान्त दिया है कि हिंसा या पशुबल किस तरह लौटकर हमें ही अपना शिकार बनाता है। अेक रीछ माताने अपने बच्चोंके साथ जंगलमें अेक झाड़से लटकता हुआ मोटा लकड़ीका डण्डा देखा। अेक बच्चेने खेल-खेलमें अुस डंडेको आगे ढकेला, जिसके फलस्वरूप लौटकर वह अुस बच्चेको लगा और वह मर गया। अिस पर मांको बड़ा गुस्सा आया और अुसने अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपने पंजोंके बल अुस अपराधी डंडेको ज्यादासे ज्यादा आगे ढकेला। अिस बार वह और ज्यादा गतिसे पीछे लौटा, दो दूसरे बच्चोंसे टकराया और अुनकी जान ले ली। यह देखकर तो मां गुस्सेसे बिलकुल अन्धी हो गअी और अुसने अपनी पूरी शक्ति लगाकर फिर यह क्रिया दोहरायी। अिस बार तो वह डंडा दीवार तोड़नेवाले ब्रकी तरह तेजी और जोरसे लौटा। अिसका नतीजा यह हुआ कि बचे हुअे बच्चे और वह मूर्ख मां दोनों अुसकी चोटसे खतम हो गये। लेखक अिस दृष्टांतसे यह सीख ग्रहण करता है कि ज्यों ही हम हिंसाकी शक्तिका छूटसे अुपयोग करते हैं, वह अेक दुश्चक्र खड़ा कर देती है, जो अुद्देश्यको ही पराजित कर देता है — साधन ही साध्यको निगल जाते हैं।

मैं आपको अेक दूसरा अुदाहरण दूं। ग्रीक पौराणिक साहित्यमें अेक शूरवीर सरदार और बड़े अजगरकी कहानी है, जिनका आपसमें घोर युद्ध होता है। वह युद्ध तेज और ज्यादा तेज होता है — दोमें से कोअी पक्ष अेक अिंच भी पीछे नहीं हटता। अन्तमें अेक अद्भुत बात होती है। किसी अेक पक्षके हारनेके बदले वे दोनों अेक दूसरेके रूपमें बदल जाते हैं! अजगर सरदारके रूपमें बदल जाता है और सरदार अजगरके रूपमें!

हम अपने जमानेमें जो कुछ देख रहे हैं, अुसका यह बिलकुल अुपयुक्त अुदाहरण है। गत विश्वयुद्धमें मित्रराष्ट्र हिटलरके साथ अुसके ही तरीकोंसे लड़े। हिटलरका तो अन्त हुआ लेकिन हिटलर-वादका नाश नहीं हुआ। हिटलरकी हवाअी-सेनाकी अविवेकपूर्ण बममारीको मित्रराष्ट्रोंकी हवाअी-सेना द्वारा जर्मन शहरों पर की गअी घोर बममारीने पीछे रख दिया। और अिस सारी चीजकी पराकाष्ठा हुअी हिरोशिमा और नागासाकीके हजारों-लाखों पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंके सामूहिक संहारमें। अब हमारे सामने हैं हैड्रोजन बम और अपने आप संहार करनेकी शक्ति रखनेवाले शस्त्रास्त्र।

फिर, सारी दुनियाने नाजियोंके यहूदी-विरोधी वादकी जो निन्दा की वह सर्वथा अुचित ही थी। लेकिन आज दक्षिण अफ्रीकामें रंगभेद और जातिभेदका युद्ध अपने पूरे जोरके साथ चल रहा है, और सभ्य जगत अुसे रोकनेके लिअे कोअी कारगर कदम नहीं अुठा पाता। केनियाको लीजिये। वहां आकर बसनेवाले मुट्ठीभर गोरोंने देशका अुत्तम हिस्सा हथिया लिया है, जहां अुन्हें शासकों या विशेष सुविधा प्राप्त वर्गके रूपमें रहनेका कोअी अधिकार नहीं है, और अुस भूमिके पुत्रोंका जंगली जानवरोंकी तरह निर्दयतासे शिकार किया जाता है; और हमसे कहा जाता है कि वहांके मूल निवासियोंको ज्यादा स्कूलों या जनकल्याणके कार्योंकी जरूरत नहीं, बल्कि ज्यादा मजबूत शासनकी जरूरत है — ज्यादा फौज और ज्यादा पुलिसकी जरूरत है, ताकि अुनके देशको हथियानेवाले गोरोंके प्रति अुनकी भावनाओंको सुधारा जा सके। और अिसके लिअे अुनका बचाव क्या है? यह हमें अेक पुरानी फ्रन्च कहावतकी याद दिलाता है — "यह जानवर अितना बदमाश है कि जब अुस पर हमला किया जाता है तो वह अपना बचाव करता है!"

www.vinoba.in

आज दुनिया जिन दो शक्तिगुटोंमें बंट गओी है, अुनके बीच किसी भी क्षण भयंकर युद्ध छिड़ जानेका खतरा हमारे सामने खड़ा है। हैरान-परेशान बनी हुओी मनुष्य-जाति अेक अैसे संकटके किनारे खड़ी है, जिसका सामना करनेमें साहसिकसे साहसिक लोग भी डरकर पीछे हट जाते हैं। लेकिन अिस संकटसे बचनेकी कोओी संभावना नहीं दिखाओी देती। आज हर जगह ज्यादा और ज्यादा शस्त्रास्त्र बढ़ानेका और अधिकाधिक निर्दयतासे अुनका अुपयोग करनेका हल्ला सुनाओी दे रहा है। यहां तक कि दोस्त और दुश्मनका सूक्ष्म भेद भी छोड़ दिया गया है। हम लेवलोंके आधार पर जीते हैं। विवेककी आवाजको राजद्रोह या गद्दारी माना जाता है। 'जो हमारे साथ नहीं है वह हमारा विरोधी है'—यह हमारा सूत्र बन गया है। अिसके फलस्वरूप लोगोंका डर, घबराहट और अुनसे चोली-दामनका सम्बन्ध रखनेवाली निर्दयता बढ़ती जाती है। तानाशाही या सर्वसत्तावाद अपने आपमें अेक घृणित वस्तु है। लेकिन क्या पागलपनका अिलाज ज्यादा बड़े पागलपनसे हो सकता है?

तब क्या अिस संकटसे बचनेकी कोओी अुम्मीद नहीं है? खुशकिस्मतीसे अैसी अुम्मीद है; अिससे बचनेका रास्ता है। कुदरती घटनाओंका अध्ययन हमें सिखाता है कि जब जब कुदरत या समाजमें कोओी प्रवृत्ति अपनी चरम सीमाको पहुंच जाती है तब अकसर अुसकी अुलटी प्रतिक्रिया होती है। अिस विद्वत्समाजके सामनें मेरे अर्थको सिद्ध करनेके लिअे भौतिक शास्त्र या प्राणीशास्त्रसे अुदाहरण देनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन अेक अुदाहरण यहां देने लायक है। यह अेक अनोखी बात है कि यद्यपि दूसरे विश्वयुद्धमें लड़ाओीके संहारक हथियार ज्यादा भयंकर बन गये थे, फिर भी अुसमें पहले विश्व-युद्धसे कम जनसंहार हुआ। अिसका कारण क्या है? सर्वसत्तावादी शक्तियोंने देखा कि अगर वे विरोधीका अन्त करनेकी अपनी शक्तिका प्रत्यक्ष प्रदर्शन कर सकें, तो अुनके लिअे अपने विरोधीका नाश करना जरूरी नहीं है। अिस खोजके आसपास अुन्होंने अपना डराने-धमकाने और कूटनीतिक दबावका अेक तत्त्वज्ञान ही खड़ा कर लिया, जिसके बल पर वे कभी-कभी अेक गोली भी न चलाकर सारीकी सारी आबादियोंको अपनी गुलाम बना सके। लेकिन ज्यों ही अिस खोजका अुपयोग किया गया, त्यों ही अुसकी विरोधी चीज सामने आओी। दमनके शिकार बने हुअे लोगोंने यह शोध की कि अगर वे आखिरी आदमी तक मरनेके लिअे तैयार हो जायं, तो बहुत संभव है कि अुन्हें मरना नहीं पड़ेगा। क्योंकि अत्याचारीका मकसद संपूर्ण आबादीका संहार करना नहीं, बल्कि अपने विरोधीको अपनी मर्जीके मुताबिक झुकाना है। अिसलिअे जिस क्षण लोग यह समझ लेते हैं कि अुनमें अैसी कोओी चीज है, जो शरीरसे भिन्न है और जिसे शस्त्रास्त्र नाशवान शरीरके साथ नष्ट नहीं कर सकते, अुसी क्षण शस्त्रास्त्रोंकी शक्ति निष्फल हो जाती है। अन्तमें यही बात हुओी। मरनेकी कला सीखकर अत्याचारसे पीड़ित लोग जिन्दा रहे, जबकि अत्याचारी तेजीसे सिरके बल सर्वनाशकी खाओीमें जा गिरा।

अिस समानताके आधार पर गांधीजीने घोषणा की कि अणुबम —जो पशुबलकी पराकाष्ठा है—का आगमन अनिवार्य रूपसे अपनी विरोधी शक्तिको, आत्माकी शक्तिको, जन्म देगा। जिस दिन मनुष्य-जाति अिस आत्म-शक्तिके बल पर पशुबलके अत्याचारका डटकर सामना करना सीख जायगी, अुसी दिन पशुबल कमजोर पड़कर बेकार हो जायगा और संहारका खतरा, जिसका आज मनुष्य-जाति और मानव मूल्योंको सामना करना पड़ रहा है, भयावने स्वप्नकी तरह गायब हो जायगा।

अिसीलिअे, मैं मानता हूं, आप सब यहां आये हैं। अिसके अिवा और भारतसे आप क्या सीख सकते? हालांकि यह कहना सही नहीं होगा कि आज भारत ठीक अपने गुरुके बताये मार्ग पर ही चल रहा है, फिर भी हम अुस मार्गको छोड़नेकी हिम्मत नहीं कर सकते। अुनकी शिक्षाकी परम्परा आज भी जीवित है और अेक सावधान अभ्यासी हमारे राष्ट्रीय जीवनके अनेक क्षेत्रोंमें और अनेक जगहोंमें अुसे काम करते भी देख सकता है—खास करके विनोबा भावेके अनोखे भूदान-यज्ञ आन्दोलनमें।

यह दिखानेके बाद कि गांधीजी किस चीजके प्रतीक थे और आजकी दुनियाके सन्दर्भमें अुनके सन्देश और अुपदेशका क्या महत्त्व है, अब मैं आपके सामने अुनके व्यक्तित्वकी झांकियां पेश करूंगा, ताकि आपको यह मालूम हो कि अुनकी शक्तिके स्रोत क्या थे और अुन्होंने अपनी अुस शक्तिका अुपयोग लोककल्याणके कार्योंमें किस तरह किया।

(अंग्रेजीसे) प्यारेलाल

भूदान-प्राप्ति, वितरित भूमि और दानपत्र-संख्या

[ता० ५-१-'५४ तक]

क्रम	प्रदेश	कुल प्राप्ति	दानपत्र-संख्या
१.	असम	१,३४९	
२.	आंध्र	१०,२९९	५५२
३.	अुत्तरप्रदेश	५,००,८९१	१२,४६३
४.	अुत्कल	५०,७८३	१६,६५६
५.	कर्नाटक	१,६६९	१९३
६.	केरल	११,१००	१,२००
७.	गुजरात	२०,८४५	२,९१७
८.	तामिलनाड	१८,५३८	२,३५०
९.	दिल्ली	७,७४५	२४३
१०.	पंजाब	३,५८४	८१४
११.	बंगाल	४५२	४३९
१२.	बिहार	१३,२३,७९६	१,१४,३०३
१३.	मध्यप्रदेश	६४,३४६	६९८
१४.	मध्यभारत	५७,६४९	४,११४
१५.	महाराष्ट्र	१०,३८०	७६९
१६.	मैसूर	२,५१६	१,०८४
१७.	राजस्थान	२,३४,३७६	९२६
१८.	विंध्यप्रदेश	४,०८७	७५०
१९.	सौराष्ट्र	८,०००	
२०.	हिमाचलप्रदेश	१,३६०	५४
२१.	हैदराबाद (द०)	७३,२५८	२,८४७
	कुल	२४,०७,०२३	१,६३,३७२

वितरित भूमि:—

अुत्तरप्रदेश	२७,९२२
तामिलनाड	२५५
मध्यप्रदेश	९२८
राजस्थान	९६१
विंध्यप्रदेश	१२५
हैदराबाद	१०,३५४
कुल	४०,५४५ अेकड़ भूमि ७,५५९ परिवारोंमें बांटी गओी है।

सर्व-सेवा-संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

कृष्णराज मेहता
दफ्तर-मंत्री

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

३० जनवरी १९५४

अेक नअी क्रान्ति

गांधी आज हमारे बीच नहीं रहे। अुनकी भस्म भारतकी नदियोंमें और भूमि पर फैल गअी है। अुनका अजेय शरीर, निडर आत्मा, लम्बे वर्ष, अुच्च अुद्देश्य — सबका बड़ी आसानीसे अन्त हो गया। . . . पिस्तौलकी गोली लगी और केवल मौनके सिवा कुछ नहीं बचा — मौन और मुट्ठीभर भस्म! यह कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है कि अज्ञान, मूर्ख, अणुबमके आविष्कार-कर्ता, सेनापति, कैप्टन, सार्जण्ट और छोटे छोटे सैनिक — सभी हिंसाको प्यार करते हैं। जिनसे वे डरते हैं, जिनसे वे नफरत करते हैं, जो अुनके खिलाफ विद्रोह करते हैं, अुन सबका बड़ी आसानीसे खात्मा हो सकता है। बन्दूक या पिस्तौलके घोड़े पर या बमके बटन पर केवल अुंगली घुमानेकी देर है कि अेक चमक पैदा होगी, धड़ाका होगा और शांति तथा राखके सिवा और कुछ न बचेगा। आज लाख आदमी अुतनी ही आसानीसे मारे जा सकते हैं जितनी आसानीसे हजार, और हजार आदमी अुतनी ही आसानीसे मारे जा सकते हैं जितनी आसानीसे अेक।

गांधी अकेले थे। अुनकी आवाज अकेली थी — हमेशा नम्र, हमेशा विवेकयुक्त। हमारी अिस तूफानसे भरी जिन्दगीमें वह अन्तरात्माकी आवाज थी। गांधीका कहना सही था, वे जानते थे कि अुनका कहना सही है, हम सब भी जानते थे कि अुनका कहना सही है। . . . हिंसककी मूर्खतायें चाहे जितने लम्बे समय तक चालू रहें, लेकिन वे यही सिद्ध करती हैं कि गांधीका कहना सही था। मानवोंके लिअे अहिंसा ही समझदारीकी चीज है। हम कितनी आसानीसे मर जातें हैं! हमारे शरीर सकुमार और अरक्षित हैं। हमारा मस्तिष्क, हृदय और आत्मा खतरेसे खाली नहीं है। हम शांतिकी स्थापना तक, वाद-विवादके निबटारे तक, स्वार्थियोंके झगड़ालूपनके शांत होने तक ठहर नहीं सकते। अुस निबटारे या समाधानके होनेसे पहले ही हमारे जीवनका अन्त आ जाता है। गांधीने कहा, हर कीमत पर हमें हिंसाका अुपयोग करनेसे अिन्कार कर देना चाहिये। अुन्होंने कहा, अन्याय और अत्याचारका अन्त तक डट कर विरोध करो, लेकिन हिंसासे दूर रहो।

सत्ताको हिंसाके साथ मिलानेवाली दुनियाके लिअे ये शब्द बहुत सादे मालूम होते हैं। . . . लेकिन सत्य हमेशा सादा-सरल ही होता है। मनुष्य भ्रम, गड़बड़ी और अुलझनोंकी परवाह करते हैं, क्योंकि वे सादे सत्यसे डरते हैं। लेकिन सत्य बदलता नहीं। वह फिर भी सादा ही रहता है . . . वह अणुसे भी अधिक बुनियादी चीज है।

दुनिया अच्छाअी, भलाअीकी अभिलाषा करती है। लोग नेकी और साधुताकी खोज करते हैं। दुनियाका कोअी शस्त्र, कोअी बम अितना शक्तिशाली नहीं है, जितनी कि अेक महान भली आत्मा। भारत हमारी दुनियामें तभी जिन्दा रहेगा और महान बनेगा, जब अुसके लोग अिस अमूल्य शक्तिका, गांधीका जीवन जिसका जीता-जागता अुदाहरण था, अुपयोग करेंगे। . . . गांधीका रहस्य अिस व्यक्तिगत अुदाहरणमें ही छिपा था। अुन्होंने वही किया जो अुन्होंने दूसरोंसे करनेके लिअे कहा। जब लोगोंने देखा कि यह सच है, तब अुन्होंने गांधीका विश्वास किया। मनुष्य अपनेमें रही लोगोंकी श्रद्धाको जिस हद तक अपने जीवन द्वारा अुचित ठहराता है, अुतना ही वह महान समझा जाता है। गांधीने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है। अब अहिंसाको अपनाना लोगोंका काम है।

दुनिया हिंसासे बिलकुल अूब गअी है। घृणा और लड़ाअीसे हमारा मन अंधा गया है, हम जहरीले बन गये हैं। सेना, शस्त्रास्त्रकी बातें करनेवालों और युद्धको अुत्तेजन देनेवालोंके शोर-गुलसे लोगोंको नफरत होती है। हम शांतिवादियों और शांतिकी स्थापनाके लिअे प्रयत्न करनेवालोंको खूब पसन्द करते हैं। लड़ाअीसे शांति कायम नहीं होती, क्योंकि हिंसा केवल ज्यादा हिंसाको ही जन्म देती है। हमें सर्वथा नअी क्रान्तिकी आवश्यकता है — वह क्रान्ति जो गांधीने हिंसासे छिन्नभिन्न हुअी दुनियामें की।*

(अंग्रेजीसे)

पर्ल अेस० बक

हमारा यह जमाना

बम्बअीकी दि केसमेन्ट पब्लिकेशन्स लिमि० नामक प्रकाशन संस्था अपनी छोटी-छोटी दिलचस्प पुस्तकोंकी प्रतियां मुझे भेंटमें भेजती रही है। वे क्राअुन साअिजमें ३०–३५ पन्नेकी होती हैं और अुनमें आजके महत्त्वपूर्ण विषयों पर अधिकारी लेखकोंके बयान होते हैं। हर पुस्तककी कीमत ६ आना होती है। वह संस्था खास विषयकी पुस्तकें भी प्रकाशित करती है। अिस तरहकी अेक ताजीसे ताजी पुस्तक श्री जे० विजयतुंग द्वारा लिखी 'योग' नामक है।

छः आना कीमतवाली अैसी अेक पुस्तक फ्रांसिस वाट्सन द्वारा लिखित 'डिनायल ऑफ फैथ' (श्रद्धाका अिन्कार) है, जिसमें हमारे जमानेके विषयमें अेक महत्त्वपूर्ण बात कही गअी है। वह यह है:

> "हम जिस युगमें जीते हैं, वह सहिष्णुताका युग है। यह अेक साहसपूर्ण घोषणा कही जा सकती है। . . . फिर भी यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि भावी अितिहासकार हिंसासे भरी हुअी और अनेक प्रकारकी कठिनाअियोंमें फंसी हुअी बीसवीं सदीको अैसे जमानेके रूपमें देखेंगे, जिसमें सहिष्णुताके सिद्धान्तका समाज पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा और जिसे (हम अैसी भी आशा रखनेका साहस कर सकते हैं कि) मानव व्यवहारोंमें अन्तिम सफलता प्राप्त हुअी। क्योंकि आज समाजकी रचनामें पड़ी हुअी दरारें खुद, अपने ढंगसे, अिस सिद्धान्तकी व्यापक स्वीकृतिको सिद्ध करनेमें मदद करती हैं।"

अगर हम आजकी दुनियामें चल रही आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तंगदिली और प्रतिद्वन्द्विताको देखें, तो यह कथन बेशक बहुत साहसपूर्ण ही कहा जायगा। फिर भी लेखक सावधानीसे कहता है कि:

> "धर्मके क्षेत्रमें सहिष्णुताका विकास जितना हमारा ध्यान खींचता है अुतना और किसी क्षेत्रमें नहीं। धर्मान्धताका कभी अन्तिम रूपसे नाश नहीं हो सकता। अेक सन्तकी हत्या करनेके लिअे वह काफी लम्बे समय तक अपना सिर अुठाये रह सकती है। परन्तु गांधीकी प्रार्थना-सभामें व्यक्त होनेवाले सर्वधर्म समभावका असर हमारी पीढ़ीके लोगों पर, अिस सबका अन्त कर देनेवाले भीषण गोलीबारसे कहीं प्रबल रूपमें हुआ है।"

और गांधीजीने दुनियाके धार्मिक विचारको सर्वधर्म समभावकी जो महान देन दी, अुसके लिअे लेखक अुन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करता है और अुसे दुनियाके लिअे भारतका महान सन्देश मानता है। यहां मैं अुसीके शब्द अुद्धृत करता हूं:

> "महात्मा गांधीके जीवनकी विशेषता यह थी कि अुन्होंने दूसरे धर्म-सम्प्रदायोंकी स्पर्धामें किसी अेकांगी सम्प्रदायको जन्म नहीं दिया। यह चीज कुछ हद तक महात्माके अपने व्यक्तित्वका परिणाम थी और कुछ हद तक अुस युगका परिणाम

* वाशिंग्टनके गांधी-स्मारकमें सन् १९४८ में दिया हुआ भाषण।

www.vinoba.in

थी, जिसे अुन्होंने अपना सन्देश दिया। सच्चे हिन्दू होते हुअे भी गांधीजी यह घोषणा कर सके कि अीश्वर-प्राप्तिके विभिन्न मार्ग हैं और वे सब सच्चे हैं। और भिन्न-भिन्न जातियोंके स्त्री-पुरुष अपने **धर्मोंको छोड़े बिना** (काले टाअिप हमने किये हैं) अुनके शब्दोंको अपना सकते थे। . . . यह सन्देश आधुनिक युगके अपने सबसे बड़े महापुरुष द्वारा दुनियाको देनेका सौभाग्य भारतको मिला, यह कोअी आश्चर्यकी बात नहीं। क्योंकि हिन्दू धर्म स्वयं सहिष्णुताकी परम्पराओंसे ओतप्रोत है। अनेक धर्मोंकी यह भूमि अपनी नअी राजनीतिक रचनामें धर्मनिरपेक्ष राज्यके सिद्धान्तकी घोषणा करे, यह भी सर्वथा अुचित ही कहा जायगा — जहां न केवल सब धर्मोंको आचरणकी ही स्वतंत्रता है, बल्कि वे सब राजनीतिसे भी स्वतंत्र हैं।"

यह दुर्भाग्यकी बात है कि भारतके कअी लोग, जिनमें अीसाअी मिशन भी शामिल हैं, हमारे युगके अिस नये और विधायक सिद्धान्तको अभी तक नहीं समझे हैं; वे आज भी 'शुद्धि', 'धर्मपरिवर्तन' वगैराके अपने पुराने नारोंसे चिपटे हुअे हैं और मानवके गहनतम आध्यात्मिक अनुभवको सामाजिक-राजनीतिक प्रवृत्तिका रूप देकर, जो लोगोंमें शिक्षाका और अन्य प्रकारका लोकहितकारी काम करके चलाअी जाती है, अुसकी छीछालेदर करते हैं।

अूपरकी पुस्तिकाका लेखक अिस युगके मुख्य सिद्धान्तका अुल्लेख करके खास तौर पर धर्मके प्रति या धर्मके विरुद्ध साम्यवादी रुखकी चर्चा करता है और अन्तमें कहता है:

"साम्यवादका अन्तिम शत्रु मनुष्यकी अन्तरात्मा है। . . . अिसीलिअे साम्यवादी व्यक्तिगत या सार्वजनिक हर प्रकारके धर्मके खिलाफ लड़ाअी करते हैं। और अिसीलिअे साम्यवादको, साथ-साथ, अपने सर्वोच्च सत्ताके दावेको धर्मकी नकली सुन्दर पोशाक पहनानी पड़ती है, आम जनताके देखनेके लिअे लेनिनकी मृतदेहको सुरक्षित रखना पड़ता है, साम्यवादके संस्थापकोंके पवित्र ग्रन्थोंसे अपील करनी पड़ती है और प्रचारकी सारी शक्ति लगाकर तथा 'विचार-नियंत्रण' करके अपने जीवित नेताओंकी भद्दी पूजाको प्रोत्साहन देना पड़ता है। अितिहासने पहले भी यह चीज देखी है। यह पुरानीसे पुरानी गलती है और वह हमेशा असफल सिद्ध हुअी है, यद्यपि मनुष्य-जातिको अुसके लिअे अपार कष्ट सहन करने पड़े हैं।"

अिस प्रकारकी दारुण यातनाका ज्वलंत अुदाहरण हमें बेरिया और अुसके साथियोंको, जिन्होंने नये सोवियट देवताओंके प्रति नास्तिकता दिखाअी थी, कुछ ही दिन पहले गोलीसे अुड़ा देनेकी करुण घटनामें मिलता है। अिसमें कोअी शक नहीं कि सोवियट हुकूमत राज्यप्रबन्ध-कला और अर्थ-व्यवस्थाका अेक साहसपूर्ण और अनोखा प्रयोग कर रही है। लेकिन सहिष्णुताके सन्देशमें 'श्रद्धाका अिन्कार' करनेके कारण अिस प्रयोगका असर बिलकुल या लगभग खतम हो जाता है। श्री राजाजीने कुछ दिन पहले मद्रास राज्यके अुस भागमें भाषण देते हुअे, जहांसे राज्यकी धारासभामें सबसे ज्यादा कम्युनिस्ट चुनकर आये हैं, अिसका बड़े सुन्दर शब्दोंमें वर्णन किया है।

अुन्होंने कहा:

"अगर कम्युनिस्ट मुझे केवल अिस बातका पवित्र वचन दे दें कि वे अिस देशकी संस्कृतिकी रक्षा करेंगे, तो मैं अपनी तरफसे अुनके हाथमें देशका शासन सौंप देनेको तैयार हो जाअूंगा। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या अुन पर यह विश्वास किया जा सकता है? . . .

"आपसी विश्वासके मूलमें अीश्वरका प्रेम और अीश्वरका डर है। अीश्वर सम्बन्धी किसी भी अुल्लेख या अुससे सम्बन्ध रखनेवाले किसी भी विचारके प्रति साम्यवादी सदासे तिरस्कार दिखाते आये हैं। धर्म-धर्मके बीच चाहे जितना फर्क हो, अीश्वर तो अेक ही है। साम्यवादियोंके लिअे अपनी पार्टी ही अुनका अीश्वर है। अुनकी प्रकृति अिस प्रकारकी है और अिसीलिअे सारी दुनियामें वे बुरी तरह बदनाम हो गये हैं। मैंने साम्यवादियोंसे व्यक्तिगत रूपमें और सामूहिक रूपमें भी कह दिया है कि अगर आपने अीश्वरको न छोड़ दिया होता, तो आज आप दुनियामें सबसे शक्तिशाली बन गये होते। साम्यवादियोंने मनुष्योंमें जो दोष देखे, अुन्हें अुन्होंने अीश्वरके मत्थे मढ़ दिया और यह मान लिया कि अगर वे अीश्वरको छोड़ देंगे तो मनुष्य सुधर जायंगे। लेकिन यह अुनकी बुनियादी गलती थी। अिसीलिअे आज सारी दुनियामें साम्यवादी मुसीबतें अुठा रहे हैं। अगर साम्यवादियोंने केवल अीश्वर और धर्मको नहीं छोड़ा होता, तो अपने सामाजिक और आर्थिक ध्येयके विषयमें आज अुनका जो रुख है वह नहीं होता। आज दुनिया दो भागोंमें न बंट गअी होती। दुःखकी बात तो यह है कि साम्यवादी अपनी समूची प्रवृत्तियोंमें नैतिक नियमों और आध्यात्मिक मूल्योंकी सर्वथा अुपेक्षा करते हैं।" ('हिन्दू' — मद्रास, २३-११-'५३)

अूपर मैंने प्रसंगवश भारतमें चल रही अीसाअी मिशनरियोंकी प्रवृत्तियोंका अुल्लेख किया है। खास करके दक्षिण भारतमें अुनकी प्रवृत्तियोंके बारेमें पहले कुछ मेरे सुननेमें आया था। और अभी हालमें भी अिस विषयमें मैंने कअी बातें सुनी हैं, जिनका मैंने 'हरिजन' में अुल्लेख किया है। अिस सम्बन्धमें मुझे कुछ अधिक जानकारी मिली है, जिसकी मैं अेक स्वतंत्र लेखमें ही चर्चा करना ठीक समझता हूं; क्योंकि अुसका सम्बन्ध गांधीजीकी सर्वधर्मोंकी प्रार्थना-पद्धतिसे और अेक अीसाअी मिशनकी अुसके प्रति पैदा हुअी प्रतिक्रियासे है।

२७-१२-'५३ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

हमारे नये प्रकाशन

आठवां अ० भा० नअी तालीम सम्मेलन (संक्षिप्त विवरण)

सेवाग्राममें गत वर्ष अक्तूबर-नवम्बरमें हुअे आठवें नअी तालीम सम्मेलनकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गअी है। पृष्ठ संख्या १४२; मूल्य: १ रु० ४ आने।

नअी तालीम प्रदर्शनी

अिस पुस्तिकामें नअी तालीम प्रदर्शनीके बारेमें सुझाव दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या १४, मूल्य : २ आने।

आफ्टर फिफ्टीन अीयर्स (पन्द्रह वर्षोंके बाद)

हिन्दुस्तानी तालीमी संघको नअी तालीमका काम करते हुअे १५ वर्ष पूरे हो गये हैं। अिस अवधिमें नअी तालीमका कितना काम हुआ है, और विशेषतः सेवाग्राममें क्या क्या किया जा रहा है, अिसका विवरण प्रस्तुत पुस्तिकामें दिया गया है। मूल्य: ४ आने।

बेसिक अेज्युकेशन: दि नीड ऑफ दि डे

गत आठवें नअी तालीम सम्मेलनका अुद्घाटन करते हुअे मध्यप्रदेशके राज्यपाल डॉ० पट्टाभि सीतारमैयाने जो अुद्बोधक भाषण दिया था, अुसे मूल अंग्रेजीमें दिया गया है। मूल्य: ४ आने।

पुस्तकें मंगानेका पता:—

प्रबंधक, प्रकाशन विभाग, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ,

सेवाग्राम (वर्धा)

www.vinoba.in

बाधक रुख

अमेरिकाके 'न्यूज़ अेण्ड वर्ल्ड रिपोर्ट' नामक पत्रमें छपी अेक कापीराअिट मुलाकातमें वे कारण दिये गये हैं, जो पाकिस्तानके प्रधानमंत्री द्वारा अमेरिकाके साथ अपनी फौजी मददकी सन्धिके बारेमें बताये कहे जाते हैं। कारण दुहरा है: पहले, वे कहते हैं कि नेहरू दो महाशक्तियोंके गुटोंके बीच शक्ति-सन्तुलन कायम रखकर दोनों पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं; दूसरे, अुनकी यह दलील है: "अगर दुनियामें दूसरा अैसा अेक मजबूत राष्ट्र हो, जो अन्य छोटे राष्ट्रोंका नेतृत्व कर सके, तो नेहरूकी राजनैतिक सौदा करनेकी ताकत कमजोर पड़ जायगी। अिसीलिअे नेहरू अमेरिका और पाकिस्तानके बीच फौजी मददके करारके खिलाफ हैं।"

यह निरी हास्यास्पद बात है; हां, अिस तरहका बिलकुल भद्दा और गलत अिलजाम लगाकर नेहरूको चिढ़ानेका ही अुनका अिरादा हो तो बात अलग है। लेकिन दलीलके लिअे हम मान लें कि यह सच है, तो भी दोमें से अेक शक्ति-गुटमें शामिल होकर पाकिस्तान भारतका प्रतिस्पर्धी कैसे बनेगा? अैसा करनेके लिअे अुसे कमसे कम अेक तीसरी शक्ति बने रहना होगा — अेक तटस्थ शक्ति। क्योंकि यही अेक चीज है, जिसकी वजहसे भारतको विश्वकी युद्धनीतिमें कोअी जगह मिलना संभव हो सकता है। पाकिस्तान अमरीकी फौजी मददके गुटमें शरीक होते ही अपनी यह हैसियत खो देता है। अैसी हालतमें यह साफ है कि दोनों गुटोंके बीच शक्ति-सन्तुलन करनेके लिअे पाकिस्तान स्वतंत्र हैसियत नहीं रख सकता। अगर श्री मोहम्मदअलीने भारत पर यह बेकारका अिलजाम नहीं लगाया होता, तो अुनके पक्षमें यह अच्छी दोस्ताना चीज होती।

अुन्हें अमेरिकाकी फौजी मदद मांगनेकी जरूरत क्यों पड़ी, यह अुन्होंने अपनी मुलाकातके अुत्तरार्धमें बताया है। अुन्होंने कहा कि "आज हम (काश्मीरके झगड़ेमें) समझौता नहीं कर पाते, अिसका मुख्य कारण यह है कि भारतकी फौजी ताकत हमसे बड़ी है। . . . जब दोनोंकी फौजी ताकत ज्यादा समान हो जायगी, तब मुझे विश्वास है कि समझौतेकी संभावना बढ़ जायगी। . . . मेरी यह राय है कि जब विरोधी शक्तियों या राष्ट्रोंकी ताकत अेक-सी होती है, तब आक्रमणकी संभावना कम रहती है। कमजोरी ही आक्रमणको न्यौता देती है। . . . "

अब कमसे कम कहा जाय तो काश्मीरके झगड़ेको निबटानेका यह बहुत अुलटा मार्ग है, जिसके लिअे श्री मोहम्मदअली भारतसे बातचीत कर रहे हैं। यह झगड़ा संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने पेश है। और भारतने बार-बार यह कहा है कि अिस झगड़ेको निबटानेके लिअे सेना या शस्त्रास्त्रोंका सहारा नहीं लिया जायगा; अितना ही नहीं, अुसने तो पाकिस्तानके साथ किसी भी क्षण 'युद्ध नहीं' की सन्धि करनेका भी प्रस्ताव रखा है। अिस सबके बावजूद, अमेरिकाके साथ शस्त्रास्त्रोंकी मददके लिअे बातचीत करना, बेशक, न तो शांतिके लिअे काम करना कहा जायगा और न अपने पड़ोसी देशके साथ दोस्ताना बरताव माना जायगा।

दुर्भाग्यसे आज आन्तरराष्ट्रीय जगतमें 'शक्तिके जरिये शांति' का सिद्धान्त घर कर रहा है, जो अुष्ण युद्धकी तैयारी करनेवाले शीत युद्धका केवल दूसरा नाम है। जो राष्ट्र सचमुच युद्धको किसी चीजका मानवताको शोभा देनेवाला हल नहीं मानते, वे दो में से किसी भी गुटमें शामिल नहीं हो सकते। पाकिस्तान अमरीकी गुटमें शामिल होनेका चुनाव करके न सिर्फ अपनी स्वतंत्रता और सुरक्षाको, बल्कि अेशियाके अपने शांतिप्रिय पड़ोसी देशोंकी स्वतंत्रता और सुरक्षाको भी खतरेमें डालता है।

अिसके सिवा, अैसी ही युक्तियां संयुक्त राष्ट्रसंघकी अिस प्रतिष्ठाको धक्का पहुंचाती हैं कि वह दुनियामें शांति बनाये रख सकता है। संयुक्त राष्ट्रसंघके अेक मुख्य राष्ट्रके नाते अमेरिकाको कमसे कम पाक-अमरीकी सन्धि जैसे फौजी स्वरूपके व्यवहारोंमें तो ज्यादा सावधान रहना चाहिये।

१९-१-'५४ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

भूदान और ग्रामोद्योग

[ता० २५-१२-'५३ को मधुवनी, जिला दरभंगामें किये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

पांच साल पहले अेक दफा अिस गांवमें मेरा आना हुआ है और आज मैं नये कामके सिलसिलेमें आ पहुंचा हूं। आज सुबह मैंने कहा था, अिस गांवको हम अेक तीर्थक्षेत्र मानते हैं। यहां वर्षोंसे खादीका काम चल रहा है, जिससे हजारों गरीबोंको राहत मिलती है। लेकिन मुझे अिस बातका खेद होता है कि लोगोंके बदन पर खादी नहीं है। शहरकी मिलोंमें बना कपड़ा पहने हुअे आप यहां आये हैं। हम नहीं समझते कि हिन्दुस्तानका किसान बिना खादीके सुखी होगा। महात्मा गांधी यह बात निरंतर कहते गये हैं। और हिन्दुस्तानकी जनताका जो दर्शन अुन्हें था वह शायद ही किसीको होगा। अब यह बात सबके ध्यानमें आ रही है और सरकारने भी महसूस किया है कि अगर हिन्दुस्तानकी गरीबी मिटानी है तो ग्रामोद्योगोंको अपनाना होगा। केवल खेती पर निर्भर रहकर हिन्दुस्तान टिक नहीं सकता। केवल खेती पर निर्भर रहकर पूर्ण जीवन किसानका नहीं बनेगा। अिसलिअे कच्चे मालका पक्का माल गांवमें ही बनाना होगा। तो गांवमें रोजगार रहेगा, धंधे रहेंगे और लोगोंको बहुत सारी चीजें खरीदनी नहीं पड़ेंगी। कुछ चीजें तो खरीदनी पड़ेंगी लेकिन कपड़ा, गुड़, तेल और अिनके अलावा और जो चीजें गांवमें बन सकती हैं, वे गांवमें ही बनानी चाहिये। यह ग्रामोद्योगका अुसूल है। और अिसके बिना हिन्दुस्तान आगे नहीं बढ़ सकता। हिन्दुस्तानमें जनसंख्या बहुत है लेकिन भगवान्ने कामके लिअे दो हाथ और खानेके लिअे अेक ही मुंह दिया है। अगर दो हाथ काममें लगते हैं तो श्रमशक्तिसे ही हिन्दुस्तानमें लक्ष्मी बढ़ सकती है। अगर बाहरसे मदद लेते हैं तो वह खतरेसे खाली नहीं है। बाहरसे मदद आअी तो अुसके पीछे कअी प्रकारके खतरे हैं। गुलामी अुसमें मौजूद है। अिसलिअे बहुत जरूरी है कि हिन्दुस्तानके मसले अपनी ताकतसे हल हों और हिन्दुस्तानकी अपनी ताकत जो कोअी है तो वह दो हाथ हैं।

आज तो परदेशसे बहुत माल हिन्दुस्तानमें आता है और स्वदेशीकी जो भावना पैदा हुअी थी वह हम भूल रहे हैं। यहां तक होता है कि बाहरसे कपड़ा सिल्क हुआ आता है और पहना हुआ आता है। यह सिलसिला जारी रहा तो शहरका और देहातका शोषण जारी रहेगा। देहातका शोषण शहरसे होगा और शहरका शोषण परदेशसे होगा। अिसलिअे जरूरी है कि शहरका शोषण बन्द हो। अैसी कअी चीजें हैं जो शहरमें बन सकती हैं। वे शहरमें बननी चाहियें और परदेशका माल बन्द होना चाहिये। और जो देहातमें बन सकती हैं वे देहातमें बननी चाहिये। खादीका काम अैसा ही अेक काम है। केवल भूदान-यज्ञसे मसला हल होगा अैसी बात नहीं है। हमने कअी दफा कहा है कि सीतारामके समान भूदान और ग्रामोद्योग हैं। अिसलिअे ये दोनों होते हैं तो किसान सुखी होता है। मिलोंके कारण जो बेकारी बढ़ी है वह कैसे घटे? बेकारोंको खिलाना तो पड़ता है। वह खिलानेका पैसा मिलके कपड़े पर लगायें तो देखिये कितना खर्चा होता है। खादी देशको कपड़ा देती है और बेकारको खिलाती भी है। अिसलिअे यह ध्यानमें रखनेकी बात है। पांच गज खादीके लिअे दस रुपया और पांच गज मिलके कपड़ेके लिअे

www.vinoba.in

पांच रुपया, तो जाहिर है खादीमें ५ रु० ज्यादा लगा। लेकिन वे पांच रुपये कहां जायेंगे? वे तो गरीबको खिलानेमें जायेंगे। तो आपको समझना चाहिये कि अुतना गुप्त दान हुआ। शास्त्रोंमें कहा है गुप्त दान श्रेष्ठ है। गुप्त दानकी महिमा बहुत बड़ी है अिसलिअे कि दाताको अभिमान नहीं चिपकता।

हम समझाना चाहते हैं कि अगर आप सब खादी खरीदते हैं तो आपकी मातायें, बहनें पेट भर खाना खायेंगी। अिससे आपकी हानि क्या होगी? धर्म ही होगा, आप दान-धर्म करते हैं, मंदिरमें जाकर पैसा चढ़ाते ही हैं। हम कहते हैं यह सारा बन्द कर दो। बन्द करनेसे अधर्म नहीं होगा। खादी खरीदिये और आधा पैसा कपड़ेका समझिये और आधा दान-धर्म समझिये। अगर खादी खरीदेंगे तो हम समझते हैं आप बहुत अच्छा धर्म करेंगे और सच्चा धर्म करेंगे। अगर मान लीजिये यात्रा, श्राद्ध आदि सब मिलाकर दो रुपये देते हैं, तो हम कहते हैं चार रुपयेकी खादी खरीदो। वहां पर दो रुपयेका गुप्त दान होगा। अगर हम किसीको पैसा देते हैं तो वह पैसेका बुरा अुपयोग कर सकता है। लेकिन अगर हम खादी खरीदते हैं, तो कोअी आलसी नहीं बन सकता। मजदूर आठ आठ घंटा काम करता है और फिर अुसे मजदूरी दी जाती है, अिसलिअे वह आलसी नहीं हो सकता। अिसलिअे बहुत जरूरी है कि लोगोंको खानेका साधन दें। अिसलिअे आपको खादी खरीदनी चाहिये यह ध्यानमें आना चाहिये। बहुत लोग पूछते हैं स्वराज्य आया, अब खादीकी क्या जरूरत है? अब खादी क्यों चाहिये? हम कहते हैं स्वराज्य प्राप्तिके लिअे खादी थी। अगर खादी छोड़ोगे तो स्वराज्य खोनेका रास्ता निकालोगे।

कम्युनिस्ट लोग हमसे कहते हैं मालदारोंसे हमें नफरत है। हम कहते हैं नहीं, आपकी तो अुनके साथ दोस्ती है। आप अुनके मिलमें बना कपड़ा पहनते हैं। हम तो आज बत्तीस सालसे कपड़ा खरीदते नहीं। और आप हर साल अुन्हें करभार दे रहे हैं। बत्तीस सालसे हमने या तो अपने हाथका कपड़ा पहना या खरीदा भी तो खादी ही खरीदी। यानी गरीबोंके लिअे ही हमारी मदद पहुंची है और महाभारतमें कहा भी है "दरिद्रान् भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।" लेकिन ये लोग क्या करते हैं? धनवानोंको गाली भी देते हैं और पैसा भी देते हैं। हम कहते हैं गाली भी छोड़ो और पैसा भी छोड़ो। मिलवाले कहते हैं कितनी भी गालियां दो, जब तक हमारा कपड़ा खरीदते हो तब तक हमें चिन्ता नहीं है। वे कितने निर्लज्ज बन गये हैं। कहते हैं हमें गालीकी परवाह नहीं, पैसा तो मिलता है। अगर आप लोग गांवका कपड़ा लो तो गरीबका भला होगा।

भाअियो, आजका यह पवित्र दिन है। २५ दिसम्बरको महात्मा अीसामसीहका जन्मदिवस माना जाता है। परमेश्वरकी कृपा है कि समय-समय पर अुसने हमारे बीच महापुरुषोंको भेजा है। अुन्हींमें से अीसामसीह अेक थे। अुन्होंने बोध क्या दिया? अुन्होंने कहा, पड़ोसी पर प्यार कर। यह हम समझते हैं तो सही, पर अमल नहीं करते। मैंने अभी कहा खादी पहनो तो पड़ोसीको सुख होगा। जो काम हम करने जा रहे हैं वह भी क्या है? यही कि पड़ोसीकी चिन्ता करो। पड़ोसीके पास जमीन नहीं है। हम अुसे दे देते हैं तो अुसके भी बाल-बच्चे पलेंगे और हम सब सुखी होंगे। पड़ोसीकी चिन्ता करोगे तो अेक-दूसरेकी मददसे हिन्दुस्तानकी ताकत बढ़ती है। नहीं तो और कौनसी ताकत है? अपने हिन्दुस्तानमें छोटे-छोटे गांव हैं। अगर अेक-दूसरेको मदद पहुंचाते हैं, अेक परिवारके समान रहते हैं, तो वे छोटे-छोटे किलेके समान मजबूत बनेंगे और अुन पर कोअी हमला नहीं कर सकेगा। और यही अीसामसीहने हमें सिखाया है।

अरविन्दने बहुत चिन्तन-मनन किया और सोचा कि साधारण मनुष्य-शक्तिसे कुछ काम होनेवाला नहीं है। मानसिक शक्तिसे बड़ी दिव्य शक्ति देव शक्ति है और कुछ काम करके अुसे बढ़ाना होगा। हम कहते हैं कि विज्ञानके कारण आपके सामने दो ही बातें हैं या तो मनुष्य-जातिका देव-जातिमें रूपान्तर करो या संहारको कबूल करो। विज्ञान और हिंसासे दुनियाका बचाव होना संभव नहीं है। विज्ञानके साथ या तो हिंसाको जोड़ो और मानवका खात्मा करो या विज्ञानके साथ अहिंसाको जोड़ो और मानवको देवमें रूपान्तरित करो। आपको अिसमें से क्या पसन्द है? अगर विज्ञानके साथ अहिंसा, प्रेम जोड़ देते हैं तो अरविन्दकी वाणी सफल होती है।

विनोबा

गांवोंकी अर्धबेकारी

कहा जाता है कि हमारे देशमें बेकारी बढ़ती जा रही है, लेकिन ध्यान देने जैसी बात तो यह है कि हमारे यहां बेकारीकी अपेक्षा अर्धबेकारी अधिक परिमाणमें है। आम तौर पर शहरोंके बेकार लोगोंकी आवाज सुनाअी देती है, मगर गांवोंके अर्धबेकारोंकी आवाज बाहर नहीं आती। अैसी स्थितिमें दरअसल खास ध्यान खींचने जैसा प्रश्न तो अिन लोगोंका है।

अभी-अभी कांग्रेस महासमितिके पंचवर्षीय योजना-विभागकी ओरसे दिल्ली प्रांतके ३०४ गांवोंमें से ३० गांवोंमें जांच की गअी थी। अुसमें बताया गया है कि:

१. दिल्लीके गांवोंकी लगभग तीन लाखकी बस्तीमें से बिलकुल बिना कामधंधेवाले लोग केवल ४ प्रतिशत ही हैं।

२. १२ प्रतिशत लोग योग्य धंधेके अभावमें बापदादाका धंधा करके ज्यों-त्यों अपनी जिन्दगी बसर कर रहे हैं।

३. किसान, मजदूर, कारीगर आदि धंधा करते हैं, लेकिन नीचे दिखाये मुताबिक वर्षमें कुछ समय अुनके पास काम नहीं होता:

किसान ३ महीने, कुम्हार ४ महीने, सुतार ३ महीने, कारीगर ८ महीने, खेत-मजदूर ६ महीने, बुनकर ४ महीने।

अिस परसे सोचना यह है कि ४ प्रतिशत बेकारोंका सवाल बड़ा है या ९० प्रतिशत बस्तीमें से लगभग चौथे भाग (२२½) का समय अर्धबेकारीमें जाता है, यह सवाल बड़ा है? बेकार लोगोंको तो दूसरी जगह भी काम पर भेजा जा सकता है, लेकिन अुन लोगोंके लिअे यह बात कैसे हो सकती है, जो धंधा तो करते हैं मगर कुछ समयके लिअे बेकार बन जाते हैं। अुनकी यह अर्धबेकारीकी समस्या तभी हल हो सकती है, जब अुन्हें अैसे गृह-अुद्योग मिलें जो घर बैठे किये जा सकें। अिस प्रकार बेकारोंको पूरे समयका काम देनेके प्रश्नके साथ ही लाखों अर्धबेकारोंको फुरसतके समयमें घर बैठे काम देनेके प्रश्न पर भी अवश्य सोचना चाहिये। बड़े-बड़े केन्द्रित अुद्योग खड़े करनेसे यह प्रश्न कभी हल नहीं हो सकता। वह फुरसतके समय घर बैठे किये जानेवाले गृह-अुद्योगोंके विकासके द्वारा ही हल हो सकता है।

(गुजरातीसे) **विट्ठलदास कोठारी**

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

गांधीजी

संपादक: **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

महान धर्म-जागरण

[श्री हेनरी हेत्सफेल्डने 'ला फ्लेम अिट ले वेन्ट' नामक फ्रेन्च पत्रमें गांधीजीके बारेमें जो लिखा था, अुसका नीचे दिया गया अंग्रेजी अनुवाद हालैण्डकी अेक बहन मिस अेलिजाबेथ वान डेर डुसेनने भेजा है।]

गांधी कौन थे? क्या वे सन्त थे? राजनैतिक नेता थे? पैगम्बर थे?

नहीं, वे अेक छोटे कदके, दुबले-पतले आदमी थे, जिनकी अिच्छाशक्ति फौलादकी तरह मजबूत थी, जो शुद्ध और साफ पानीकी तरह पवित्र सन्देश दुनियाके लिअे लाये थे और आध्यात्मिक प्रयोगोंकी अनोखी प्रतिभा अपनेमें रखते थे। अेक छोटे और नाटे आदमी, लेकिन बहुत ज्यादा अशान्त और अस्वस्थ बना देनेवाले।

वे अीसाअी नहीं थे। लेकिन मेरी समझमें नहीं आता कि अुन्हें धर्मपरिवर्तन करके अीसाअी क्यों बनना चाहिये था। बेशक, वे अिस बातकी प्रतीक्षा करते थे कि अीसाअी खुद अपना हृदय-परिवर्तन करें और अीसाके सच्चे भक्त बनें।

वे अत्यन्त विवेकशील थे और हमेशा सच्ची और व्यवहारमें आ सकने लायक बातों पर डटे रहना चाहते थे। अुन्होंने अपना सारा जीवन विवेक और बुद्धिमानीके साथ अेक अखण्ड प्रयोगके रूपमें ही व्यतीत किया। हम आम तौर पर आदर्शके विरुद्ध जीवन बिताते हैं। गांधीजीका आचरण आदर्शके ज्यादा नजदीक था, क्योंकि वे यथार्थताके साथ आदर्शकी परीक्षा करके अुसका मूल्य आंकना चाहते थे। अुनका आदर्श अिस धैर्यपूर्ण कसौटी पर खरा अुतरा है और प्रयोगके बाद भी अुसका अस्तित्व कायम है।

हिंसा अन्यायको मिटानेके बजाय अुसे बढ़ाती है, तब अन्यायके खिलाफ कैसे लड़ा जाय? गांधीजीने जीवनभर सारे अन्यायों और अत्याचारोंको अहिंसाके फन्देकी तरफ खींचा, जहां अुनका अन्त होना अनिवार्य था, क्योंकि वहां अैसी किसी चीजकी गुंजाअिश नहीं रहती थी जिसके खिलाफ वे लड़ सकें।

लड़नेवालेको शिकार बनना स्वीकार कर लेना चाहिये। और लोहेके फ्रेमका चश्मा पहननेवाले अिस छोटे आदमीने जीवनके अन्तिम क्षण तक शिकार बनना ही स्वीकार किया, तब फिर हम अिसका अफसोस क्यों करें कि वे मेथोडिस्ट, प्रेस्बिटेरियन या अेंग्लीकन चर्चके अनुयायी नहीं थे?

अुनका जीवन, जो सत्य और मनुष्यके प्रेमसे ओतप्रोत था, साहसपूर्ण कर्मसे पवित्र और शुद्ध बन गया था — अैसा कर्म जो अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण, अत्यन्त क्रांतिकारी और अत्यन्त शान्त था।

आशा है कि थोड़े शब्दोंमें मैं आपको यह समझा सकूंगा कि गांधी कौन थे। अगले रविवारको मैं नीचेके धर्मवाक्य पर प्रवचन करूंगा :

> "कअी लोग पूर्वसे और पश्चिमसे आयेंगे और अब्राहम, आअिजेक और जैकोबके साथ अीश्वरके आध्यात्मिक राज्यमें बैठेंगे। लेकिन अीश्वरीय राज्यके पुत्र बाहरके घोर अन्धकारमें फेंक दिये जायेंगे और लोग रोयेंगे और दांत पीसेंगे।"

यह जाननेके लिअे कि जनवरी १९४८ के अन्तमें मारा गया आदमी कौन था, लोगोंको गांधीके बारेमें जानना और सुनना होगा। गांधीकी हत्याकी बात सुनकर मुझे कोअी दुःख नहीं होता; बल्कि मेरे मनमें अेक तीव्र भावना पैदा होती है, जिसमें अीश्वरका आभार माननेकी वृत्तिके साथ यह अिच्छा मिली हुअी है कि अिस महान धर्म-जागरणमें भाग लिया जाय।

(अंग्रेजीसे) **हेनरी हेत्सफेल्ड**

धर्म और राजनीति

सम्पादक, हरिजन

महोदय,

भारतके राजपुरुष और राजनीतिज्ञ हमारे कालेजोंके विद्यार्थियोंसे राजनीतिके साथ धर्मको न मिलानेकी बात कहते हैं। लेकिन प्रेसिडेन्ट लिन्कनने राजनीति यानी राष्ट्रीय और आन्तर-राष्ट्रीय मामलोंके साथ धर्मको मिलाया था। और सारी दुनिया जानती है कि अुसके सुखद परिणाम आये थे।

जिस धर्ममें लिन्कनकी श्रद्धा थी, अुसका अुन्होंने बाअिबलके अिन शब्दोंमें वर्णन किया था:

> "तू अपने प्रभु, अपने अीश्वरको अपने संपूर्ण हृदय, संपूर्ण शक्ति और संपूर्ण मनसे प्रेम कर। और तू अपने पड़ोसीको, जो कि सारी मनुष्य-जाति है, अपने ही जैसा प्यार कर।"

लिन्कन सचमुच धार्मिक मनुष्य था। यह बात आजके राष्ट्रोंके शासकोंके बारेमें नहीं कही जा सकती, जिनमें से अधिकतर धर्मको केवल शाब्दिक आदर ही देते हैं, लेकिन जिनके हृदयोंमें अभिमान, लोभ, और घृणाके दुर्भाव भरे होते हैं। धर्म अिनका निषेध करता है, जो राष्ट्रोंके बीच युद्धको जन्म देते हैं।

गांधीजीके अुपदेशके अनुसार स्कूल और कालेजके विद्यार्थियोंको सच्चे धर्मकी शिक्षा देनी चाहिये, ताकि वे अपने दैनिक जीवनमें न्यायपरायण, अीमानदार, सत्यनिष्ठ, दयालु, संयमी, धीर, नम्र और सादे बन सकें। अेक अंग्रेज शिक्षाशास्त्रीका कहना है: "अगर हम शिक्षाका धर्मसे विच्छेद कर देंगे, तो हम होशियार शैतानोंको ही पैदा करेंगे।"

(अंग्रेजीसे) **सोराबजी मिस्त्री**

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]

नरहरि परीख

कीमत ६-०-० डाकखर्च १-७-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
सेवककी प्रार्थना	गांधीजी	३८५
गांधीजी जिसके प्रतीक थे	प्यारेलाल	३८६
भूदान-प्राप्ति, वितरित भूमि और दानपत्र-संख्या	कृष्णराज मेहता	३८७
अेक नअी क्रान्ति	पर्ल अेस० बक	३८८
हमारा यह जमाना	मगनभाअी देसाअी	३८८
बाधक रुख	मगनभाअी देसाअी	३९०
भूदान और ग्रामोद्योग	विनोबा	३९०
गांवोंकी अर्थबेकारी	विट्ठलदास कोठारी	३९१
महान धर्म-जागरण	हेनरी हेत्सफेल्ड	३९२
धर्म और राजनीति	सोराबजी मिस्त्री	३९२
टिप्पणी :		
हमारे नये प्रकाशन		३८९

www.vinoba.in